अम्बेडकर का राजनीतिक विरासत और दलित आंदोलन

पंकज कुमार मोहन

डॉ॰ अम्बेडकर समाज सुधारक और सामाजिक क्रांति के सूत्रधार होने के साथ-साथ राजनीति वेत्ता भी थे। उनके विचार में राजनीतिक सत्ता के बिना दलितों का विकास संभव नहीं था। उन्होंने सामाजिक और राजनीतिक अधिकारों की लड़ाई लड़ने के लिए 1924 में 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' बनाई, 'अखिल भारतीय दलित वर्ग संघ' बनाया, 'समता सैनिक दल' की स्थापना की। 1936 में 'इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी' (स्वतंत्र श्रम दल) गठित किया। आम चुनाव (1937) में उनके 'स्वतंत्र श्रम दल' ने बंबई प्रांत में विधान सभा का चुनाव लड़ा। जब वे 1942 में भारत के श्रम सदस्य बने तो उन्होंने 'अखिल भारतीय शिडयूल्ड कास्ट्स फेडरेशन' (भारतीय परिगणित जाति संघ) की स्थापना की। इस तरह दलित आंदोलन के विभिन्न मोड़ों और पड़ावों पर अम्बेडकर सामाजिक राजनीतिक मंच बनाते रहे। उनके इरादे ऊँचे और पवित्र थे। यह संगठन सदियों से दलित-शोषित लोगों की आवाज उठाने के लिए संवैधानिक लड़ाई के मंच थे। एक प्रकार से उनके 'स्वतंत्र श्रम दल' (इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी) को ही 'अखिल भारतीय शिड्यूल्ड कास्ट्स फेडरेशन' का रूप दिया गया था। इसके प्रथम अध्यक्ष एन॰ शिवराज बनाए गए और स्वयं अम्बेडकर मार्गदृष्टा थे। लेकिन 1946 और स्वतंत्र भारत के प्रथम आम चुनाव (1952) में उनके 'शिडयूल्ड कास्ट्स फेडरेशन' को चुनावी सफलता नहीं मिली। उसका पूर्णरूपेण सफाया हो गया और कांग्रेस की छत्रछाया में जगजीवन राम और अन्य दलित नेता दलितों के नाम पर राजनीतिक सत्ता में आ गए।